

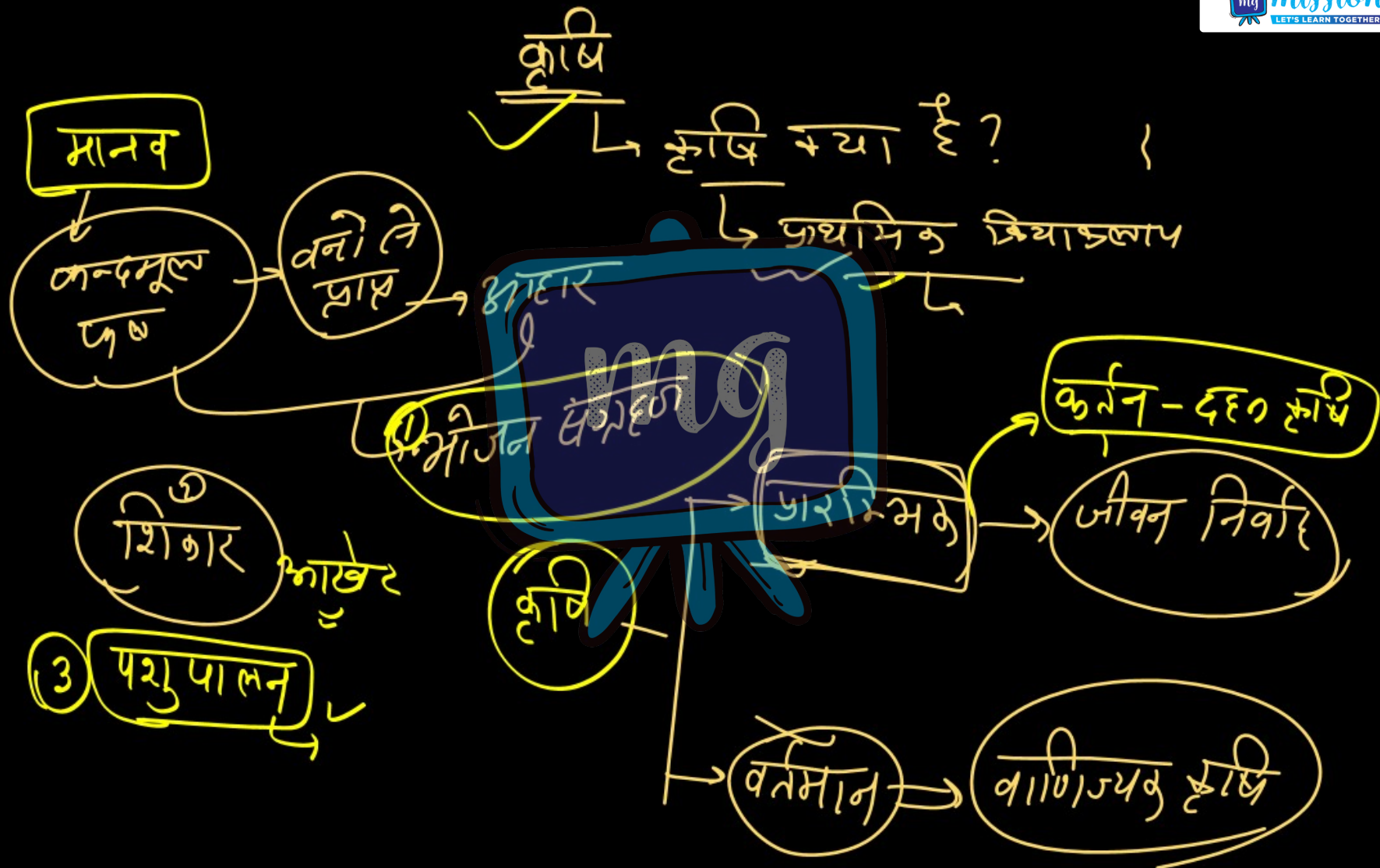
ई- पाठशाला

CLASS 10th भूगोल

कृषि
Agriculture
ONE SHOT

((•)) LIVE | 07 OCT | 6:30 PM





कृषि प्रमुख हैं -

- खरीफ ✓
- रबी ✓
- जायद ✓

प्रमुख फसलें

① खाद्यान्न -

→ अनाज -

→ मोटे अनाज

→ मिलेडल

→ गेहूँ, चावल

→ दालें / दलहन

② अन्य खाद्य फसलें -

→ तिलहन
गन्ना

③ रेशीदार फसलें

→ कपास, जूट

④ पेय फसलें

→ चाय, कॉफी

⑤ बागानी फसलें

→ फल, सब्जियाँ

भारत में कृषि

विकास
समस्याएँ



कृषि

- कृषि एक प्राथमिक-क्रिया है
- कृषि की दृष्टि से भारत एक महत्वपूर्ण देश है।
- भारत की दो-तिहाई जनसंख्या कृषि-कार्यों में संलग्न है।

66.66%

खाद्यान्न उत्पादन

- विभिन्न उद्योगों के लिए कच्चे माल का उत्पादन कुछ उत्पादों (चाय, कॉफी, मसाले) का निर्यात भी

कृषि के प्रकार

- कृषि हमारे देश की प्राचीन आर्थिक-क्रिया है।
- पिछले हजारों वर्षों के दौरान भौतिक पर्यावरण, प्रौद्योगिकी और सामाजिक-सांस्कृतिक रीति-रिवाजों के अनुसार खेती करने की विधियों में परिवर्तन हुआ है।
- जीवन-निर्वाह खेती से लेकर वाणिज्य खेती तक कृषि के अनेक प्रकार हैं।

वर्तमान में भारत के विभिन्न-भागों में निम्नलिखित प्रकार के कृषि-तंत्र अपनाए गए हैं—

i. प्रारंभिक जीविका-निर्वाह कृषि —



आदिम जीवन
निर्वाह कृषि

मानसून निर्भर

- भूमि के छोटे-टुकड़ों पर **आदिम कृषि-औजारों** (लकड़ी के हल, खुदाई करने वाली छड़ी) तथा **परिवार/समुदाय श्रम की मदद** से की जाती है।
- इस प्रकार की कृषि प्रायः **मानसून, मृदा की प्राकृतिक उर्वरता और अन्य पर्यावरणीय-परिस्थितियों की उपयुक्तता पर निर्भर** करती है।



'कर्तन-दहन प्रणाली' (Slash and Burn)



- किसान जमीन के **टुकड़े साफ** करके उन पर अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए **अनाज व अन्य खाद्य फसलें** उगाते हैं।

स्थानान्तरशील
कृषि

- जब **मृदा की उर्वरता कम** हो जाती है तो किसान उस भूमि के टुकड़े से **स्थानान्तरित** हो जाते हैं और कृषि के लिए भूमि का दूसरा टुकड़ा **साफ** करते हैं।
- **प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा मिट्टी की उर्वरता शक्ति बढ़ जाती है।**

Q.① कर्तन-दहन कृषि
में उत्पादन कम होने
का क्या कारण है?

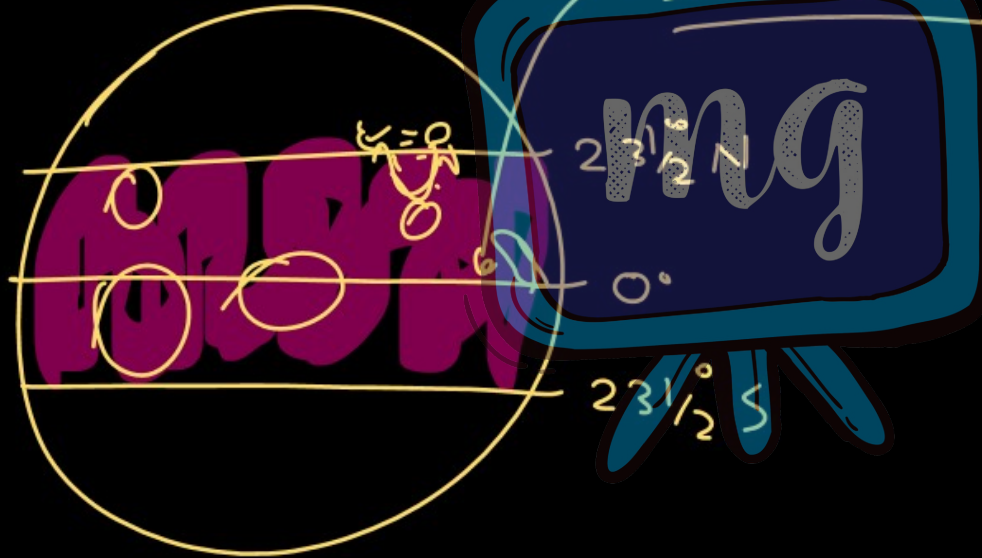
Ans

चूँकि किसान उर्वरक अथवा अन्य आधुनिक
तकनीकों का प्रयोग नहीं करते, इसलिए इस कृषि में
उत्पादकता कम होती है।



कार्बन-दहन कृषि

उदाहरण कटिबंधीय क्षेत्र

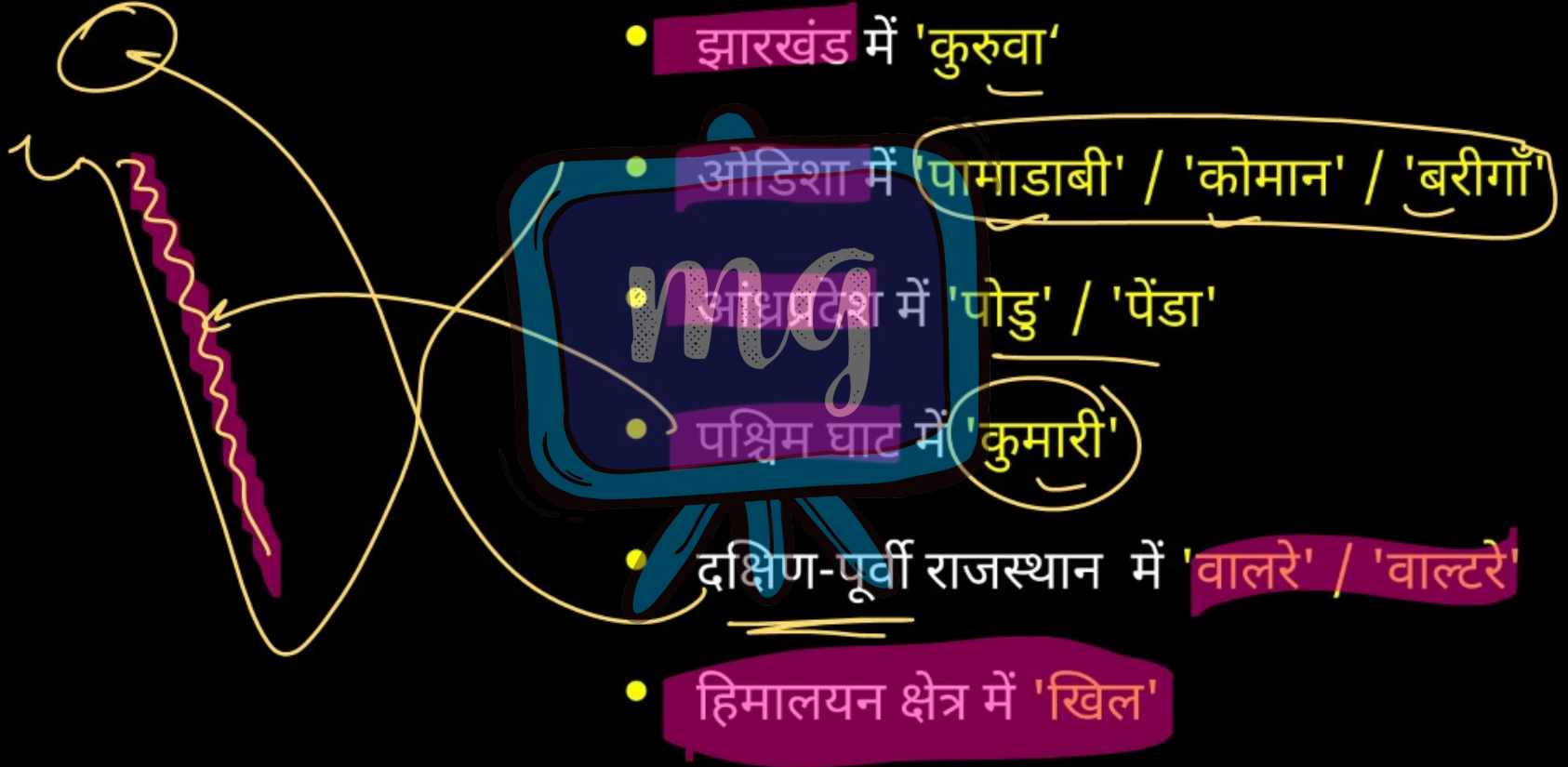


कर्तन-दहन कृषि

देश के विभिन्न भागों में इस प्रकार की कृषि को

विभिन्न नामों से जाना जाता है—

- उत्तर-पूर्वी राज्यों (असम, मेघालय, मिजोरम और नागालैंड) में झूम श्रूमिंग
- मणिपुर में पामलू
- मध्य प्रदेश में 'बेबर या दहिया'
- छत्तीसगढ़ (बस्तर जिले) और अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में दीपा



विभिन्न देशों में कर्तन-दहन कृषि

- मैक्सिको और मध्य अमेरिका में 'मिल्पा'
- वेनेजुएला में 'कोनुको'
- ब्राजील में 'रोका'
- मध्य अफ्रीका में 'मसोले'
- इंडोनेशिया में 'लदांग'
- वियतनाम में 'रे'

श्रीलंका
→ चैना

भारत में कृषि के प्रकार

1.

प्रारंभिक जीविका निर्वाह कृषि

2.

गहन जीविका कृषि

3.

वाणिज्यिक कृषि

4.

रोपण कृषि

ii. गहन जीविका कृषि —



Q. ① गहन-जीविका कृषि की विशेषताएँ बताएँ।

सिद्धान्त-२

उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ भूमि पर जनसंख्या का दबाव अधिक होता है।

यह श्रम-गहन खेती है जहाँ अधिक उत्पादन के लिए अधिक मात्रा में जैव-रासायनिक उर्वरकों और सिंचाई का प्रयोग किया जाता है।

Q. ② गहन जीविका कृषि में क्या निवेश किया जाता है?

सिद्धान्त-२, सिंचाई, जैव-रासायनिक



भूस्वामित्व में विरासत के अधिकार —

- पीढ़ी दर पीढ़ी जोतों का आकार छोटा और अलाभप्रद होता जा रहा है और किसान वैकल्पिक रोजगार न होने के कारण सीमित भूमि से अधिकतम पैदावार लेने की कोशिश करते हैं।
- अतः कृषि भूमि पर बहुत अधिक दबाव है।

iii. वाणिज्यिक कृषि —



उद्योग के बड़े पैमाने पर उत्पादन

वाणिज्यिक
कृषि

- **मुख्य लक्षण :** आधुनिक निवेशों जैसे अधिक पैदावार देने वाले बीजों, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग से उच्च पैदावार प्राप्त करना है।

- कृषि के वाणिज्यीकरण का स्तर विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग है।

जैसे — चावल हरियाणा और पंजाब में वाणिज्य-फसल है, परंतु ओडिशा में जीविका-फसल है

iv. रोपण कृषि —

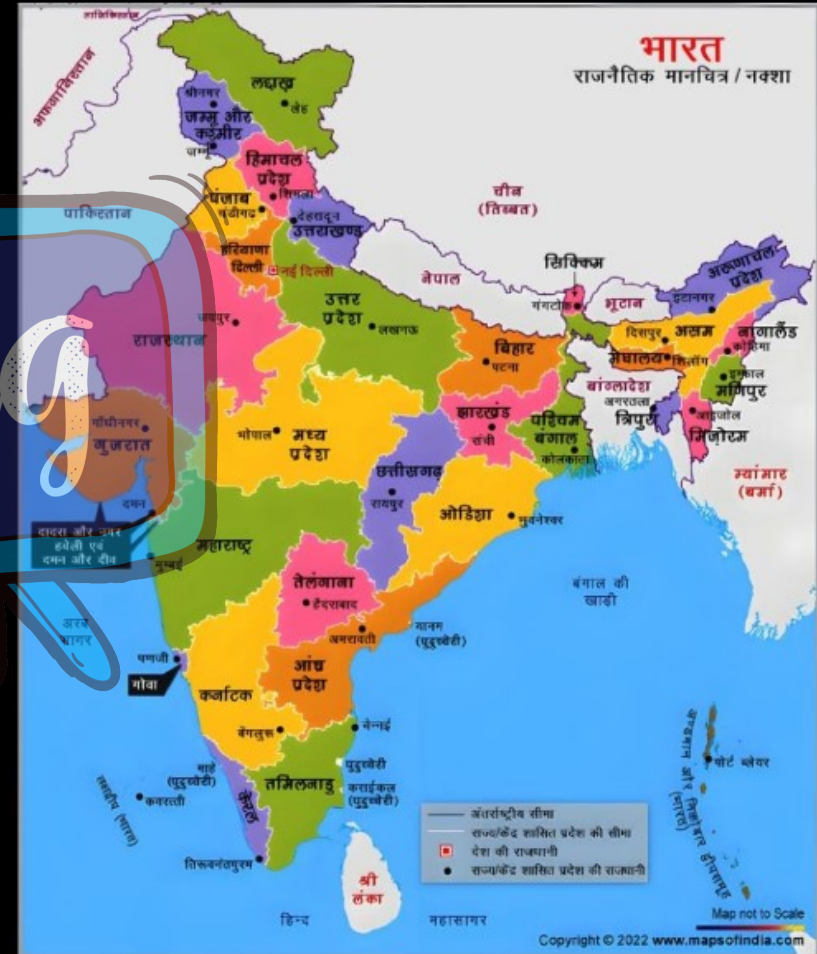
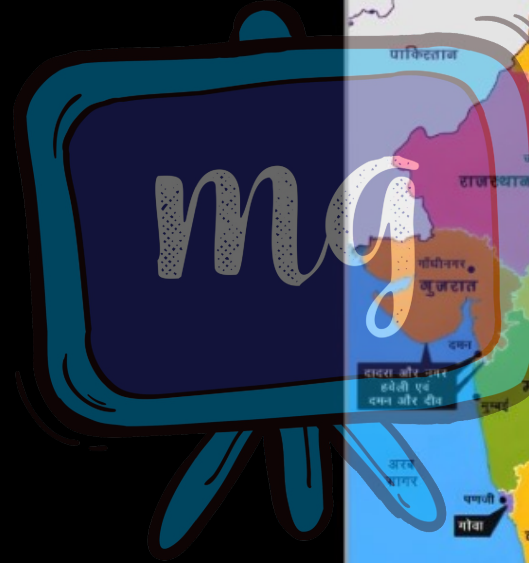
- एक प्रकार की वाणिज्यिक खेती लंबे-चौड़े क्षेत्र में
- एकल फसल बोई जाती है
- व्यापक क्षेत्र में की जाती है
- अत्यधिक पूँजी और श्रमिकों की सहायता से की जाती है
- इससे प्राप्त सारा उत्पादन उद्योग में कच्चे माल के रूप में प्रयोग होता है।

भारत में महत्वपूर्ण रोपण फसले —

- चाय, कॉफी, रबड़, गन्ना, केला इत्यादि
- चाय: असम और उत्तरी बंगाल में,
- कॉफी: कर्नाटक में
- चूँकि रोपण कृषि में उत्पादन, बिक्री के लिए होता है
- इसलिए इसके विकास में परिवहन और संचार-साधन से संबंधित उद्योग और बाज़ार महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।







शस्य प्रारूप

- देश में बोई जाने वाली फसलों में अनेक प्रकार के खाद्यान्न और रेशे वाली फसलें, सब्जियाँ, फल, मसाले इत्यादि शामिल हैं।

भारत में तीन शस्य ऋतुएँ हैं —

- रबी
- जायद
- खरीफ़

i. रबी फसल —

- अक्टूबर से दिसंबर के मध्य बोया जाता है

- अप्रैल से जून के मध्य काटा जाता है।

मुख्य फसलें — गेहूँ, जौ, चना, मटर, सरसों।

प्रमुख राज्य — पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर,

हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश।

- शीत-ऋतु में पश्चिमी-विक्षोभों से होने वाली वर्षा

(मावठ)।

- इन फसलों के अधिक उत्पादन में सहायक होती है।

उत्तरी भारत

गोल्डन ट्रॉफी

ii. ज़ायद फसल —

- रबी और खरीफ ऋतुओं के बीच।
- ग्रीष्म ऋतु में बोई जाने वाली फसल।

मुख्य फसलें — तरबूज, खरबूज, खीरा, सब्जियाँ।



iii. खरीफ फसल —

- मानसून के आगमन के साथ बोई जाती हैं।
- सितंबर-अक्तूबर में काट ली जाती हैं।

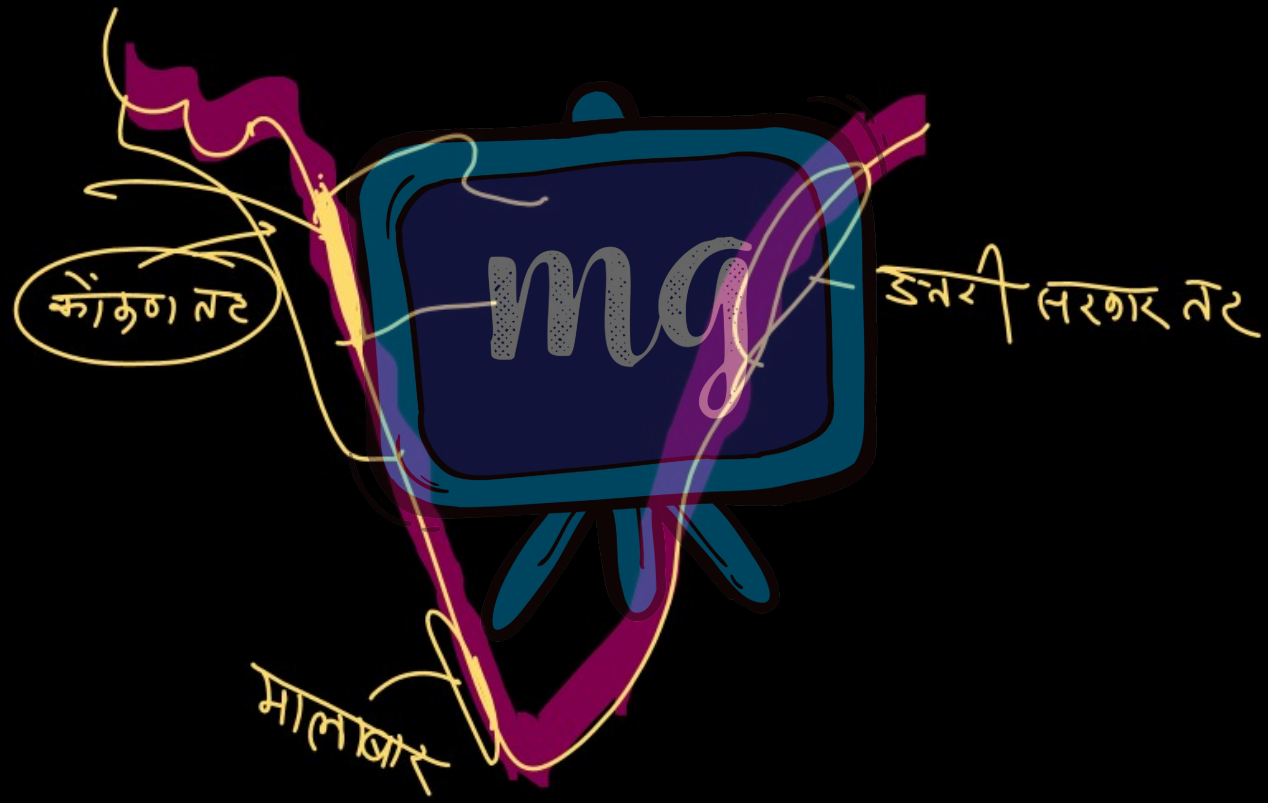
मुख्य फसलें — चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, तुर (अरहर), मूँग, उड़द, कपास, जूट, मूँगफली, सोयाबीन।

प्रमुख राज्य — असम, पश्चिम-बंगाल, ओडिशा, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र (विशेषकर कोंकण तटीय क्षेत्र), उत्तर प्रदेश, बिहार।

Questions

Telegram

SSIT



- पिछले कुछ वर्षों में चावल पंजाब और हरियाणा में बोई जाने वाली महत्वपूर्ण फसल बन गई है।

- असम, पश्चिम-बंगाल और ओडिशा में धान की तीन फसलें — ऑस, अमन और बोरो बोई जाती हैं।



मुख्य फसलें

- मिट्टी, जलवायु और कृषि पद्धति में अंतर के कारण देश के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक प्रकार की खाद्य और अखाद्य फसलें उगाई जाती हैं।



भारत में उगाई जाने वाली मुख्य फसलें—



साबुत



गेहूँ



मोटे अनाज



दालें



गन्ना



तिलहन



चाय



काँफी



कपास



जूट



चावल —

- भारत में अधिकांश लोगों का खाद्यान्न।

- सबसे बड़ा चावल उत्पादक देश—

① चीन; ② भारत

- खरीफ की फसल।

- उगाने के लिए आवश्यकता - उच्च तापमान

(25° सेल्सियस से ऊपर) अधिक आर्द्रता (100) सेमी. से अधिक वर्षा)

कम वर्षा वाले क्षेत्रों में इसे सिंचाई करके उगाया जाता है।

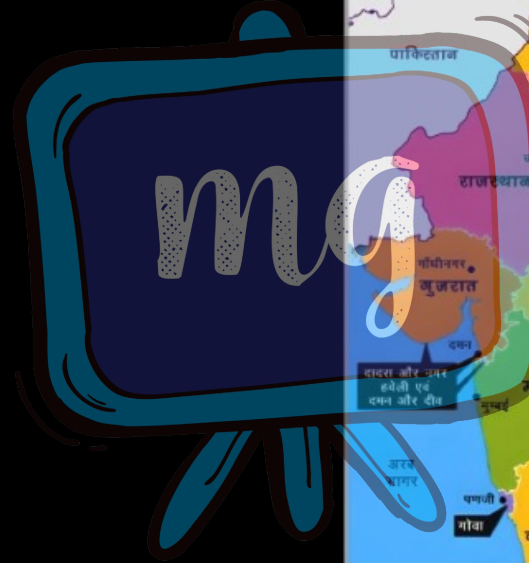


पंजाब - हरियाणा

प्रमुख
क्षेत्र

- उत्तर और उत्तर-पूर्वी मैदानों, तटीय क्षेत्रों और डेल्टाई प्रदेशों में उगाया जाता है।

• नहरों के जाल और नलकूपों की सघनता के कारण पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी-उत्तरप्रदेश और राजस्थान के कुछ कम वर्षा वाले क्षेत्रों में चावल की फसल उगाना संभव हो पाया है।

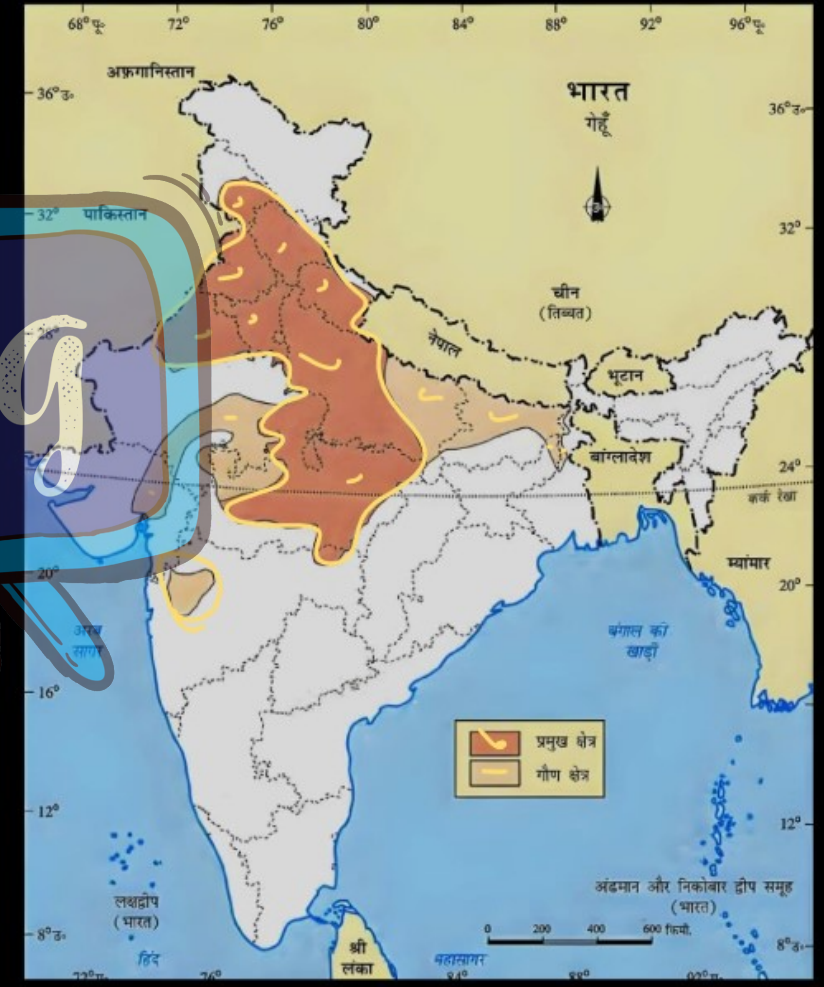
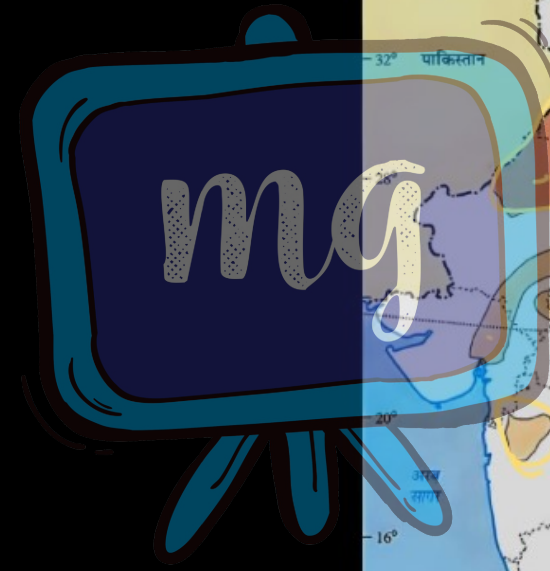


गेहूँ —

- भारत की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्यान्न-फसल।
- रबी की फसल।
- देश के उत्तर और उत्तर-पश्चिमी भागों में पैदा की जाती है।
- उगाने के लिए : शीत ऋतु
- समान रूप से वितरित 50 से 75 सेमी. वर्षा।
- पकने के समय : खिली धूप की आवश्यकता।

देश में गेहूँ उगाने वाले दो मुख्य क्षेत्र :

- उत्तर-पश्चिम में गंगा-सतलुज का मैदान
- दक्कन का काली मिट्टी वाला प्रदेश
- प्रमुख राज्य : पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, राजस्थान के कुछ भाग।



मोटे अनाज (Millets) —

- ज्वार, बाजरा, रागी।
- पोषक तत्वों की मात्रा अत्यधिक।



रागी —

आयसन

- प्रचुर मात्रा में लोहा, कैल्शियम, सूक्ष्म-पोषक।
- क्षेत्रफल और उत्पादन की दृष्टि से तीसरी महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल।
- लाल, काली, बलुआ, दोमट, उथली काली मिट्टी।
- वर्षा पर निर्भर।
- आर्द्र-क्षेत्रों में उगाए जाने के कारण सिंचाई की आवश्यकता नहीं।

प्रमुख राज्य : महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, झारखंड, सिक्किम।

बाजरा —

- बलुआ , उथली, काली मिट्टी।

प्रमुख राज्य : राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात,
हरियाणा

mg



मक्का —

- खाद्यान्न व चारा - दोनों रूप में प्रयोग होती है।
- खरीफ फसल (कुछ राज्यों जैसे- बिहार में रबी की ऋतु में भी उगाई जाती है) *Imp.*
- 21°-27° सेल्सियस तापमान
- पुरानी जलीढ़ मिट्टी
- आधुनिक प्रौद्योगिक निवेशों (उच्च पैदावार देने वाले बीजों, उर्वरकों और सिंचाई के उपयोग) से मक्का का उत्पादन बढ़ा है।

मुख्य उत्पादक राज्य: कर्नाटक, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना

दालें —



उड़द



मुँग



मसूर



मटर



चना



- भारत विश्व में दालों का सबसे बड़ा उत्पादक तथा उपभोक्ता देश।

- शाकाहारी खाने में दालें सबसे अधिक प्रोटीन-दायक होती हैं।
- दालों की कम नमी की आवश्यकता होती है।
- शुष्क परिस्थितियों में भी उगाया जा सकता है।



- फलीदार फसलें होने के नाते (अरहर को छोड़कर अन्य सभी दालें) वायु से नाइट्रोजन लेकर भूमि की उर्वरता को बनाए रखती हैं।
- अतः इन फसलों को आमतौर पर अन्य फसलों के आवर्तन (rotating) में बोया जाता है।
- मुख्य दलहनी फसले : तुर (अरहर), उड़द, मूँग, मसूर, मटर, चना
- मुख्य उत्पादक राज्य : मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, कर्नाटक



अन्य खाद्य फसलें



गन्ना



तिलहन



चाय



कॉफी



बागवानी फसलें



गन्ना —

- उष्ण और उपोष्ण-कटिबंधीय फसल।
- उष्ण और आर्द्र जलवायु।
- 21° से 27° सेल्सियस तापमान।
- 75 से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा।
- कम-वर्षा वाले प्रदेशों में सिंचाई की आवश्यकता।
- काफी शारीरिक श्रम की आवश्यकता।
- चीनी, गुड़, खांडसारी, शीरा बनाने के काम आता है।

- ब्राजील के बाद भारत गन्ने का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश।

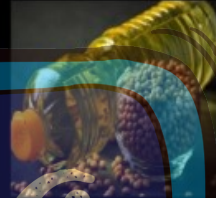
मुख्य उत्पादक राज्य : उत्तर-प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, बिहार, पंजाब, हरियाणा।

- गन्ने की फसल को तैयार होने में लगभग एक वर्ष लगता है।

तिलहन —



नारियल



सीयाबीन



तिल



अरंडी



बिनौला



अलसी



सूरजमुखी



सरसों



मूँगफली

तिलहन —

- 2018 में भारत विश्व में (चीन के बाद) दूसरा बड़ा तिलहन उत्पादक।

- देश में कुल बोए गए क्षेत्र के 12% क्षेत्र पर तिलहन की फसलें उगाई जाती हैं।

Q. मुख्य तिलहन फसलें: मूँगफली, सरसों, नारियल, तिल, सोयाबीन, अरंडी, अलसी, सूरजमुखी

- अधिकतर खाद्य हैं (खाना बनाने में प्रयोग)
- कुछ को साबुन, प्रसाधन (शृंगार का सामान) और उबटन उद्योग में कच्चे माल के रूप में भी प्रयोग किया जाता है।

मूँगफली —

- खरीफ की फसल।
- देश में मुख्य तिलहनों के कुल उत्पादन का आधा भाग इसी फसल से।
- प्रमुख उत्पादक राज्य : ^① गुजरात, ^② राजस्थान, तमिलनाडु।
- अलसी, सरसों : रबी की फसलें।
- तिल : उत्तर-भारत में खरीफ और दक्षिण-भारत में रबी।
- अरंडी : खरीफ और रबी दोनों।

चैय फसले

चाय —

- रोपण कृषि।
- शुरुआत में अंग्रेज़ भारत में लाए थे।
- आज अधिकतर चाय-बागानों के मालिक भारतीय हैं।
- उष्ण और उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु।
- वर्ष भर कोष्ण, नम और पालारहित जलवायु की आवश्यकता।
- ह्यूमस और जीवांश युक्त गहरी मिट्टी।



- सुगम जल-निकास वाले ढलवाँ क्षेत्रों में।
- वर्ष-भर समान रूप से होने वाली वर्षा की बौछारें इसकी कोमल पत्तियों के विकास में सहायक होती हैं।
- श्रम-सघन उद्योग (प्रचुर मात्रा में सस्ता और कुशल श्रम चाहिए)
- इसकी ताजगी बनाए रखने के लिए चाय की पत्तियाँ बागान में ही संसाधित की जाती हैं।

- चाय के मुख्य-उत्पादक क्षेत्र : असम, पश्चिम-बंगाल
(दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी की पहाड़ियाँ), तमिलनाडु,
केरल।
- इनके अलावा हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड,
मेघालय, आंध्रप्रदेश, त्रिपुरा आदि राज्यों में भी चाय
उगाई जाती है।
- 2018 में भारत, चीन के बाद दूसरा बड़ा चाय
उत्पादक देश था।

चैय फल्ल

काँफ़ी —

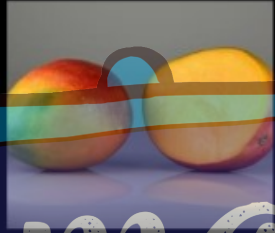


- भारतीय काँफ़ी अपनी गुणवत्ता के लिए विश्वविख्यात है।
- हमारे देश में अरेबिका-किस्म की काँफ़ी पैदा की जाती है।
- जो आरम्भ में यमन से लाई गई थी।
- इस किस्म की विश्व-भर में अधिक माँग है।
- इसकी कृषि की शुरुआत बाबा-बूदन पहाड़ियों से हुई और आज भी इसकी खेती नीलगिरि की पहाड़ियों के आस पास (कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में) की जाती है।

कर्नाटक

फल
सब्जियाँ

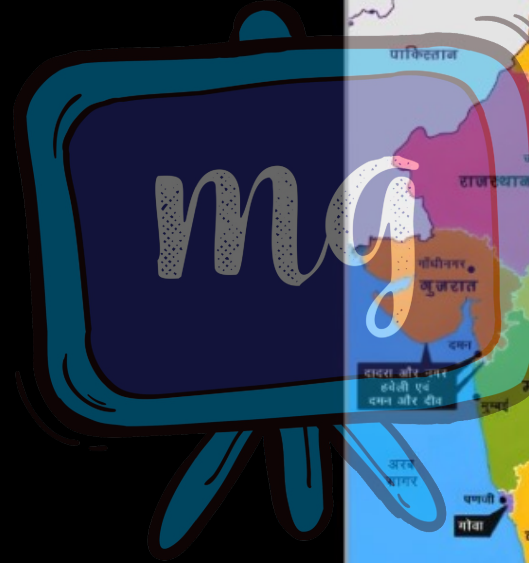
बागवानी फसलें —



- 2018 में भारत का फलों और सब्जियों के उत्पादन में चीन के बाद दूसरा स्थान था।
- भारत उष्ण और शीतोष्ण कटिबंधीय दोनों ही प्रकार के फलों का उत्पादक है।
- भारतीय फलों की विश्वभर में बहुत माँग है।



- महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, उत्तरप्रदेश, पश्चिम-बंगाल के आम
- नागपुर, चेरापूँजी (मेघालय) के संतरे
- केरल, मिजोरम, महाराष्ट्र, तमिलनाडु के केले
- उत्तरप्रदेश, बिहार की लीची
- मेघालय के अनन्नास
- आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र के अंगूर
- हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर के सेब, नाशपाती, खूबानी, अखरोट
- भारत का मटर, फूलगोभी, बंदगोभी, प्याज, टमाटर, आलू, बैंगन उत्पादन में प्रमुख स्थान है।



अखाद्य फसलें



रबड़



कपास



जूट

रबड़ —

- महत्त्वपूर्ण कच्चा माल है जो उद्योगों में प्रयुक्त होता है।
- भूमध्य-रेखीय क्षेत्र की फसल परंतु, विशेष परिस्थितियों में उष्ण और उपोष्ण क्षेत्रों में भी उगाई जाती है।
- 200 सेमी. से अधिक वर्षा
- 25° सेल्सियस से अधिक तापमान
- नम और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है।
- इसे मुख्य रूप से केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह और मेघालय (गारो पहाड़ियों) में उगाया जाता है।
-

रेशोदार फसलें —



- भारत में उगाई जाने वाली **चार मुख्य** रेशेदार फसलें —

कपास, जूट, सन, प्राकृतिक-रेशम

- इनमें से पहली तीन मिट्टी में फसल उगाने से प्राप्त होती हैं; चौथी रेशम के कीड़े के **कोकून** से प्राप्त होती है

- (रेशम का कीड़ा **मलबरी** पेड़ की हरी पत्तियों पर पलता है)

- (रेशम-उत्पादन के लिए रेशम के कीड़ों का पालन 'रेशम उत्पादन' (**Sericulture**) कहलाता है)

कपास —

- भारत को कपास के पौधे का मूल-स्थान माना जाता है।
- सूती कपड़ा उद्योग में कपास एक मुख्य कच्चा माल है।
- कपास उत्पादन में भारत का विश्व में चीन के बाद दूसरा स्थान है (2017)
- दक्कन पठार में काली-मिट्टी कपास उत्पादन के लिए उपयुक्त मानी जाती है।
- उगाने के लिए उच्च तापमान, हल्की वर्षा या सिंचाई, 210 पाला रहित दिन और खिली धूप की आवश्यकता होती है।

- यह **खरीफ** की फसल है और इसे पककर तैयार होने में 6 से 8 महीने लगते हैं।



मुख्य उत्पादक राज्य — महाराष्ट्र, गुजरात,
मध्यप्रदेश, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु,
पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश



जूट —

- “सुनहरा रेशा”
- जूट की फसल बाढ़ के मैदानों में जलनिकास वाली उर्वरक मिट्टी में उगाई जाती है जहाँ हर वर्ष बाढ़ से आई नई मिट्टी जमा होती रहती है।
- इसके बढ़ने के समय उच्च तापमान की आवश्यकता होती है।



मुख्य उत्पादक राज्य — पश्चिम बंगाल, बिहार, असम, ओडिशा, मेघालय।

प्रयोग — बोरियाँ, चटाई, रस्सी, तंतु व धागे, गलीचे आदि बनाने में।

• इसकी उच्च लागत और कृत्रिम रेशों (विशेषकर नाइलोन) की कीमत कम होने के कारण बाज़ार में इसकी माँग कम।

प्रौद्योगिकी और संस्थागत सुधार



बढ़ती जनसंख्या



=

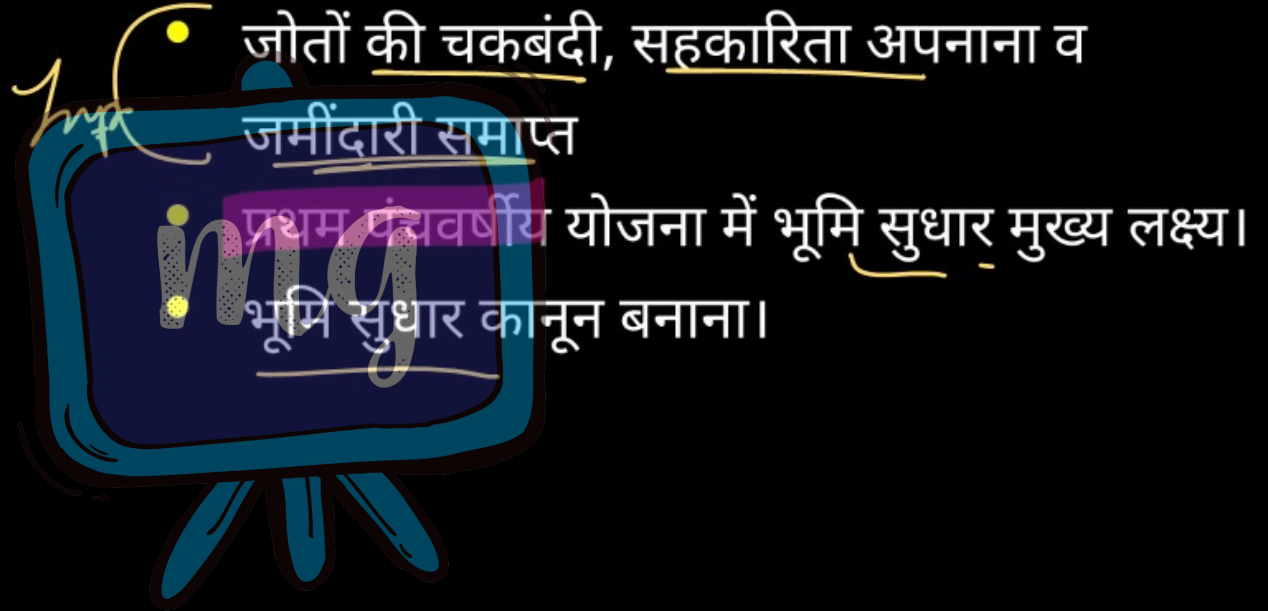


बढ़ती भोजन मांग

आवश्यकता क्यों —

- लगातार भूमि संसाधनों के प्रयोग से कृषि विकास अवरूद्ध
- कृषि विकास की गति मन्द
- सिंचाई साधनों के विकास के उपरांत भी बहुत बड़े भाग में कृषि मानसून पर निर्भर
- कृषि, भूमि की प्राकृतिक उर्वरता पर निर्भर
- 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या की आजीविका कृषि पर निर्भर।

स्वतंत्रता के बाद कार्य —



1960 व 1970 में भारत सरकार द्वारा कृषि सुधार—

- हरित व श्वेत क्रांति - पैकेज टेक्नोलॉजी पर आधारित
- विकास सीमित क्षेत्र तक रहा।



1980 व 1990 के दशक के कार्य —

- भूमि सुधार हेतु व्यापक कार्यक्रम शुरू।
- फसल बीमा का प्रावधान - सूखा, बाढ़, चक्रवात, आग व बीमारी के लिए कम दर पर किसान ऋण हेतु ग्रामीण बैंक व सहकारी समितियों की स्थापना।



किसान कल्याणकारी योजनाएँ व कार्यक्रम

- किसान क्रेडिट कार्ड योजना।
- व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना।
- आकाशवाणी और दूरदर्शन पर मौसम जानकारी बुलेटिन व कृषि कार्यक्रम।
- न्यूनतम सहायता मूल्य व कुछ महत्वपूर्ण फसलों के लाभदायक खरीद मूल्यों की घोषणा।



भूदान - ग्रामदान आंदोलन

- नेतृत्वकर्ता - विनोबा भावे
- इसे रक्तहीन क्रांति भी कहा जाता है।
- विनोबा भावे - *मपः*
- गाँधीजी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी।
- गाँधीजी की ग्राम स्वराज अवधारणा को लोगों तक पहुँचाने हेतु पूरे भारत में पदयात्राएँ की।

आचार्य विनोबा भावे

भू-दान —

- पोचमपल्ली में भूमिहीन ग्रामीणों ने भूमि माँगी।
- विनोबा भावे ने सहकारी कृषि हेतु जमीन उपलब्ध करवाने का आशवासन दिया।
- सभी में उपस्थित श्री रामचन्द्र रेड्डी ने 80 भूमिहीनों को 80 एकड़ जमीन बांटने की पेशकश की।

ग्रामदान —

- जमींदारों ने पूरा गाँव भूमिहीनों को देने की पेशकश की।